Deg - I (H)
Paper - II
Date : 27/04/2022

स्वामी दयानन्द सरस्वती

* परिचय
* प्रस्तावना
* प्रारंभिक जीवन
* स्वामी दयानन्द की शिक्षाएं
* आर्यसमाज का गठन
* उपसंहार

परिचय : आधुनिक भारत के महान चिंतक, समाज सुधारक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के वैदिक संस्करण को फिर से जीवित करने हेतु 'वेदों की ओर लौटो (Back to Vedas)' का संदेश दिया था। उन्होंने हिन्दू धर्म को, तथा संस्कृति को पुनर्जीवित करना उनका सपना था।

प्रस्तावना : 19वीं शताब्दी में अनेक महापुरुष हुए, जिन्होंने कई पुनर्जागरण आन्दोलन का नेतृत्व प्रयत्न किया। इन महापुरुषों में दयानन्द सरस्वती भी एक थे। वे बाल ब्रह्मचारी एवं प्रतिभाशाली थे। संस्कृत, भारती, हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान तथा प्रखर वक्ता थे। आधुनिक, वर्तमान [illegible] को स्थापित कर वे एक राष्ट्रीय धर्म बनाना चाहते थे। स्वामी दयानन्द ने वैदिक धर्मोद्धार तथा सामाजिक सुधार के लिए एक शक्तिशाली आन्दोलन आरंभ किया।

उन्होंने भारत के राजनैतिक दर्शन तथा संस्कृति के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने हिन्दू समाज में प्रचलित अंधविश्वासों एवं कुरीतियों दूर करने के लिए आर्य समाज स्थापित किया। भारतीय जीवन में नवचेतना का संचार करने के लिए वेदों की अमृत वाणी का प्रयोग किया। आर्यसमाज की शक्तिशाली संस्था के द्वारा समाज में नयी ऊर्जा का संचार किया। वे भारतीय राष्ट्र के महान सेवक, देशभक्त एवं संस्कृति के नायक थे।

प्रारंभिक जीवन : स्वामी दयानन्द का जन्म 1824 में गुजरात के टंकारा नामक स्थान में हुआ था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उनका परिवार शैव सम्प्रदाय का अनुयायी था। एक दिन महाशिवरात्रि के दिन उन्होंने मंदिर में भगवान शंकर की मूर्ति पर चूहों को उछल कूद मचाते हुए देखा। इस घटना ने उन्हें मूर्ति पूजा का प्रबल विरोधी बना दिया। तरुण अवस्था में घर को छोड़कर सच्चे ज्ञान की खोज करने निकल पड़े। 24 वर्ष की आयु में संन्यास की दीक्षा ग्रहण करने के बाद दयानन्द सरस्वती कहलाने लगे। उन्होंने अज्ञान, अन्धविश्वास एवं जातीय व्यवस्था की दूषित अवधारणा से ग्रसित समाज को नवीन ज्ञान ज्योति प्रदान करने हेतु संकल्प लिया और 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

वैदिक साहित्य को महत्व देते हुए उन्होंने लिखा कि "वेद विश्व की सर्वाधिक प्राचीन धरोहर है। वेद समस्त मानवीय ज्ञान का भंडार है। वेदों के अनुसार ही सृष्टि का निर्माण एवं विनाश होता है। यह क्रिया अनादि एवं अनन्त है।" सत्यार्थ प्रकाश में 14 अध्याय लिखे, जिनमें उन्होंने 'ओम' शब्द की व्याख्या की। इसके साथ ही बच्चों का जन्म तथा उनकी प्रारंभिक शिक्षा, गुरुकुल की देखभाल का विवेचन किया। स्वामी दयानन्द ने वेदों को देवी-देवता के भक्ति का एक प्रकार बताया है।

स्वामी दयानन्द के विचार :

(सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व शैक्षिक)

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक विचारों में प्रमुख यह है कि वे हिन्दू समाज को सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं कुप्रथाओं से मुक्त करना चाहते थे। वे यह मानते थे कि हिन्दू समाज कुरीतियों एवं सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अंधविश्वासों में डूबा हुआ है। अतः इन बुराईयों को दूर करने की आवश्यकता है।

उन्होंने जाति-प्रथा का घोर विरोध किया। सारा हिन्दू समाज इसी प्रथा के कारण छिन्न-भिन्न हो रहा है। वे न तो मंदिरों में प्रवेश पा सकते हैं और न ही वेदों का अध्ययन कर सकते हैं। समाज को जाति-प्रथा एवं छुआछूत से मुक्त करने के उपरान्त समाज को उन्नत व प्रगतिशील बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को कर्म पर आधारित माना है न कि जन्म पर।

उन्होंने बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी प्रथाओं का विरोध किया है। उन्होंने सर्वप्रथम बाल विवाह के विरोध में विवाह के लिए लड़कों की आयु 25 वर्ष और लड़कियों की आयु 16 वर्ष निश्चित की। दहेज-प्रथा को समाज का अभिशाप मानते हुए इसके उन्मूलन का प्रयास किया।

विधवाओं के पुनर्विवाह हेतु उन्होंने व्यापक एवं सक्रिय प्रयास किये। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक धर्म परिवर्तन को शुद्धिकरण के माध्यम से पुनर्स्थापित किया। हिन्दू धर्म में वापसी के लिए धर्म शुद्धि आंदोलन चलाया। स्वामी जी ने ऐसे लोगों को दूसरे धर्म से हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया। दयानन्द जी ने नारी शिक्षा तथा उनके अधिकारों का समर्थन किया।

Scanned with CamScanner

उन्होंने पर्दा प्रथा तथा नारी शिक्षा की उपेक्षा का घोर विरोध किया। आर्य समाज के माध्यम से कन्या स्कूल खोलकर तथा स्त्री शिक्षा के प्रचार का कार्य किया। बाल-विवाह, दहेज प्रथा आदि के विरुद्ध आन्दोलन चलाया।

धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक विचार :

स्वामी दयानन्द सन्यासी एवं कर्मयोगी थे। वे भारतीय राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। वे सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय कार्यकर्ता थे। वे ऐसा वैदिक जागरण चाहते थे, जो आधुनिक युग के अनुरूप गुलाम भारतीयों को सब बंधनों से मुक्त करे। उन्होंने स्वराज्य लोकतंत्र का उद्घोष करते हुए 'स्वशासन' एवं 'स्वराज्य' की मांग उठाई।

वे भारतीयता एवं भारतीय संस्कृति पर गर्व महसूस करते थे। इसी भारतीयता को वे गुलामी से मुक्त कराना चाहते थे ताकि उस पर गर्व किया जा सके। उन्होंने स्वराज एवं लोकतंत्र की मांग की। राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी का समर्थन किया। आर्थिक स्वतंत्रता हेतु स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया

अन्तर्राष्ट्रवाद का जनक

स्वामी दयानन्द हिन्दू मुसलमान वाद के प्रतीक थे, भारतीय राष्ट्रवाद के पुजारी थे लेकिन उनके हृदय में सम्पूर्ण विश्व के प्रति सद्भाव था और इस दृष्टि से वे 'सार्वभौम मानवतावाद' के पुजारी थे। उन्होंने इस्लाम व ईसाई मतों का खण्डन किया था लेकिन इस में उनका किसी प्रकार का कोई अपमान नहीं था। इस्लाम और ईसाई के मत पर आक्रमण परिस्थितियों के अनुसार किया गया था। स्वामी दयानन्द की विचारधारा सभी धर्मों की शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व समर्थक है। उन्होंने 1883 में सभी धर्मों की सभा का आयोजन नई दिल्ली में किया था। उन्होंने इस सभा में हिन्दू-मुसलमानों की एकता पर बल दिया था और उपदेश दिया था कि सभी धर्म विविध मान्यताओं के साथ जीवित रह सकते हैं। उनका उद्देश्य मानव मात्र की मुक्ति था। दयानन्द में मानवता और विश्व बन्धुत्व की नीति अद्भुत समान थी और कार्य करने की दिशा में सदैव प्रसन्नता होती थी।

Scanned with CamScanner

उपसंहार:- उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के मूल्यों को व्यक्तिगत जीवन में प्रभाव की संज्ञा दी, उन्होंने राष्ट्र-सेवा की दिशा में प्रबल कार्यों का उपदेश दिया और इस बात पर बल दिया कि, भारत देश के प्रति उनके कुछ कर्तव्य हैं। एक विचारक के रूप में उन्होंने राजसत्ता पर नैतिक नियंत्रण की व्यवस्था की। उनका आदर्श व्यक्ति जो गतिशील एवं आध्यात्मिक 'धार्मिक मानव' रहा, जिसे आज [illegible] के नाम से जाना जाता है। स्वामी दयानन्द जी का जीवन में वेद, त्याग, तपस्या, ज्ञान, सदाचार और शान्ति की प्रतिमूर्ति था, लेकिन आध्यात्मिक सिद्ध के साथ वीरतापूर्वक यथार्थ जाने को विश्वास रखते थे। भारत के धार्मिक तथा सामाजिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय जागृति में एक प्रमुख का भारी योगदान रहा है।

———— x ————

Giriwar Singh, Asst. Professor
Dept: Political Science
P.N. College, Pandaul, Madhubani
Class - Deg I (H)
Paper — II
Topics - स्वामी दयानन्द सरस्वती
(Swami Dayanand Saraswati)
Date: 27/04/2020

Scanned with CamScanner